Research Paper

Volume : 2 | Issue : 12 | December 2013 • ISSN No 2277 - 8179

पुरूष सत्तात्मक समाज में गांधारी की नारी अस्मिता : 'कोमल गांधार'

Purush Sattatmak Samaj Me Gandhari Ki Nari Asmita : "Komal Gandhar"

Literature

KEYWORDS :

Vishnu Jogarana Research Scholar, Saurashtra University, Rajkot.

'अस्मिता' अर्थात् पहचान ! जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु की अपनी एक अलग पहचान होती हैं। उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग पहचान तथा अस्मिता होती है। जो उसके व्यक्तिगत रूप को प्रकट करती है। इसी पहचान के कारण व्यक्ति अपने आचार–विचार प्रकट करता है। यदि व्यक्ति की कोई विषेश पहचान न हो तो वह मात्र कल्पना का विशय अथवा किड़ें–मकोड़ों की श्रेणी में आ जायेगा। उसके व्यक्तित्व तथा रूप, गुण आदि अनुमान तथा कल्पना के विशय हो जायेंगे। इसलिए संसार का प्रत्येक मानव चाहे वह स्त्री हो या पुरूश अपने व्यक्तित्व के प्रति सजाग होता है।

भारतीय वाङ्मय में साहित्यिक सृजन की दृश्टि से महाभारत सर्वाधिक उर्वर अपजीव्य रहा है। रचनाकारों ने इसके विभिन्न कथा–सूत्रों, आख्यानों, पात्रों आदि को आवष्यक्तानुसार अपना विशय बनाकर इनमें नये सिरे से अर्थान्वेशण किया है। षंकर षेश कृत 'कोमल गांधार' एक ऐसा ही विषिश्ट प्रयास है। 'कोमल गांधार' विराट राजनीतिक परिघटनाओं के मध्य पिसती नारी की असहाय चीख की पहचान है। प्रभामंडित व्यक्तियों के अनजाने यथार्थ को समझने और रेखांकित करने की चेश्टा है और कुछ सार्वभोम समाधान प्रस्तुत करने की लेखकिय ललक भी है।

'कोमल गांधार' में पुरूश सत्तात्मक समाज में निरीह नारी की उत्पीड़ित नियती और उसकी अस्मिता के सनातन प्रष्नों को गांधारी के माध्यम से उठाया गया है। गांधारी सदियों से पुरूश वर्ग द्वारा छली और षोशित नारी का प्रतीक है। नारी पर स्वत्व और बलात् अधिकार भावना पुरूश की आदिम मनोवृत्ति रही है। 'कोमल गांधार' में पुरूश की इसी मनोवृत्ति की षिकार बनी है – गांधारी। गांधारी जो सुबल राजा की कन्या है, ध्रृतराश्ट्र की पत्नी तथा दुर्योधन–दुःषासन सहित सौ पुत्रों की माँ है।

नाटककार षंकर षेश ने 'कोमल गांधार' के पौराणिक पात्रों और उनसे जुड़ी जीवन स्थितियों को मानविय दृश्टि से पकड़ा है। गांधारी के माध्यम से वर्तमान संवेदना के स्पन्दनों को उभारा है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार ने वर्तमान समय में विकृत होती राजनीति, पुरूश–सत्तात्मक समाज में नारी की उत्पीड़ित, नियति, मानवीय सम्बन्धों में व्याप्त अंतर्विरोध, तनाव, टकराहट, अहं तथा व्यक्ति के जीवन मूल्यों के विघटन में अनाधिकार राजनीतिक हस्तक्षेप को व्यापक फलक पर उतारा है।

षंकर षेश ने 'कोमल गांधार' के माध्यम से गांधारी के जीवन की षोकांतिका को प्रस्तुत कर यह बताने का प्रयत्न किया हैं कि कर्तव्य की आड़ में पाप करना ही हमारी नियती हो गई हैं। गांधारी एक स्त्री है, क्या इसीलिए उस पर अन्याय करने का उसके पिता, भिश्म और यहाँ तक की उसका भावी पति धृतराश्ट्र को अधिकार हैं ? क्या विवाह जैसे व्यक्तिगत निर्णय में उसकी सहमति का कोई अर्थ नहीं है ? क्यो नकार दिया गया उसके अस्तित्व को पूरी तरह ? क्या सब लोगों ने एक योजना बनाकर उस पर अन्याय नहीं किया ? क्या कुरू–कुल में स्त्री का स्वाभिमान कोई अर्थ नहीं रखता ? उसकी कोई अस्मिता नहीं है क्या ? राजनीति इतनी क्रुर होती है क्या ? राजरक्त से जन्मे षरीर से ज्यादा कुछ नहीं माना गया उसे। ऐसा क्यों ? क्या राजनीति व्यक्ति को इतना पतित बना सक्ति है ? एक आक्रोष भी, कि स्त्री एक खाली ज़मीन नहीं है जिसे आसानी से रौंद कर षांति से जिया जा सके ? इत्यादि अनके प्रष्न डॉ. षेश ने 'कोमल गांधार' नाटक के माध्यम से उठाये हैं।

आलोच्य नाटक में भी भीश्म एक कठोर राजनीतिज्ञ बनकर हर भावनात्मक सवालों का राजनीतिक हल ढूँढते हैं। भीश्म इस नाटक में उन राजनीतिज्ञों का प्रतिक बनकर आये हैं, जो हर 'अनीति' को 'राजनीति' कहकर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। नाटक में भिश्म को शडयन्त्रकारी, छल–कपट करने वाला, कन्या–हरण कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

भीश्म राजनीतिक साँठ–गाँठ तथा अपनी षक्ति के प्रभाव से गांधारी का विवाह धृतराश्ट्र से करा देते हैं। भीश्म की घृणित राजनीतिक सोच गांधारी की अस्मिता को निगल जाती हैं। भीश्म धृतराश्ट्र को अविवाहित नहीं रहने देना चाहते थे, क्योंकि उन्हें कुरूवंष के समाप्त हो जाने का डर था। एक दासी के साथ धृतराश्ट्र के सम्बन्ध गहराते जा रहे थे। ऐसे में यदि दासी से षूद्र पुत्र हो गया तो वह आगे चलकर सत्ता पर दावा भी कर सकता है। इसलिए वह चाहते थे कि धृतराश्ट्र का विवाह जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिए। वे राज्य का हित सबसे उपर मानते थे इसलिए उनके मत से गांधारी तथा ध्रृतराश्ट्र के विवाह में न तो महत्व गांधारी का था और न धृतराश्ट्र का। भीश्म संजय से कहते हैं – ''तुम साधारण–सी बात को कुछ ज्यादा ही महत्व दे रहे हो, दस विवाह में न तो महत्व है इस लड़की का और न ही धृतराश्ट्र का..... कौरवों को उतराधिकारी नहीं चाहिए क्या ? उसके लिए जरूरी है दो षरीर..... और एक कर्मकाण्ड.....।''[1] तात्पर्य यह है कि गांधारी का महत्व मात्र इतना ही है कि उससे हस्तिनापुर के लिए उत्तराधिकारी पैदा किया जा सके बस।

पुरूश वर्ग की इस घृणित राजनीति के कारण गांधारी को मिलता है – अंधत्व का अभिषाप ! वह अन्याय बर्दाष्त नहीं कर पाती। अपने उपर किये गये अन्याय के प्रति आकोष व्यक्त करती हैं। घृणा और प्रतिहिंसा के विचारों से आन्दोलित होकर वह अपनी आँखों पर आजीवन पट्टी बाँधने की घोशणा करती है। जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन अंधकार मय तथा संवेदन षून्य हो जाता है। आखिर गांधारी को इस विड़म्बित जीवन जीने को विवष करने का जिम्मेदार कौन है ? भीश्म ही न, और भीश्म जैसे अन्य पुरूश। भीश्म द्वारा आत्मनिर्णय के अधिकार से प्रवंचित गांधारी पहली और अंतिम स्त्री नहीं है, अपितु स्त्री पर अन्याय और षोशण की पूरी परम्परा है। सत्यवती, अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका तथा इनके बाद गांधारी और माद्री। नारी के प्रवंचित होते रहने का अंत नहीं।

धृतराश्ट्र को गांधारी के षरीर की आवष्यकता थी। उस षरीर से उत्पन्न एक और षरीर, दो आँखों वाला राज्य–सत्ता का भावी अधिकारी। वह गांधारी से कहता है – ''तो मुझे चाहिए तुम्हारा षरीर। हाँ, षरीर.... मुझे चाहिए तुम्हारे षरीर से उत्पन्न एक और षरीर – दो आँखों वाला राज–सत्ता का भावी अधिकारी.....।''[2] उक्त उद्धरण से यह स्पश्ट नहीं होता कि धृतराश्ट्र के लिए गांधारी साधन के रूप में इस्तमाल की जाने वाली वस्तु के अलावा और कुछ नहीं है ? क्या धृतराश्ट्र भी गांधारी के षरीर मात्र को राज–सत्ता के भावी अधिकारी के लिए इस्तमाल नहीं करता ?

पुरूश प्रधान समाज में स्त्री की गति इससे ज्यादा कुछ और नहीं कि वह पुरुश का अध्रुापन दूर करती है। उसके षरीर की भूख और कामाषक्ति को सन्तुश्ट करती है। गांधारी धृतराश्ट्र के लिए बच्चा पैदा करने वाली मषीन है। अहंग्रसित पुरूश (धृतराश्ट्र) ने कभी यह जानने का प्रयत्न ही नहीं किया कि ''स्त्री को समझने के लिए कभी षरीर के पार भी जाना होता है।''[3] धृतराश्ट्र को भी गांधारी का षरीर ही अपेक्षित है, व्यक्तित्व नहीं। क्योंकि इस षरीर का, मषीन की भाँति प्रयोग कर उन्हें वंष विकास का स्वप्न साकार करना है, इससे बढ़कर राज्य के लिए उत्तराधिकारी जुटाना है। धृत्राश्ट्र के रूप में पुरूश वर्ग अपने इन्हीं सीमित उद्देष्यों के अंधेपन में नारी की अस्मिता को नहीं समझ पाता। निष्चय ही राजनीति तथा राज्यसता की घृणित मानसिकता को धृतराश्ट्र प्रकट करता हैं। इस तरह धृतराश्ट्र भी गांधारी पर आजीवन अन्याय करता रहा।

'पिता रक्षति कौमार्ये' की मान्यता के अनुसार पिता अपनी पुत्री की कौमार्य की रक्षा करने के साथ ही उसके लिए योग्य जीवनसाथी भी चुनता है। परन्तु गांधारी के पिता गांधार नरेष जाबाल गांधारी का विवाह राजनीतिक हितों के चलते एक अन्धे व्यक्ति धृतराश्ट्र के साथ तय कर देते हैं। उस समय पूरे आर्यवर्त में हस्तिनापुर एक षक्तिषाली साम्राज्य था जबकी गांधार एक छोटा राज्य। हस्तिनापुर की मित्रता तथा अति–षक्तिषाली राज्य का सम्बन्धी बनने के लालच में गांधार नरेष गांधारी का विवाह धृतराश्ट्र जैसे अन्धे व्यक्ति के साथ स्वीकार कर लेते हैं। इस पूरे शडयन्त्र की भनक भी गांधारी को नहीं हो पाती। तात्पर्य यह है कि एक पिता अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए अपनी पुत्री को साधन के रूप में इस्तेमाल करता है। पिता के कारण ही उसे आजीवन अंधत्व का अभिशाप तथा एक अन्धे व्यक्ति के साथ जीवन जीने के लिए विवष होना पड़ता है। राजनीतिक हित व्यक्ति को कितना पतित बना सकता है वह गांधारी के पिता के आवरण से स्पश्ट हो जाता है।[4]

इस प्रकार ''कोमल गांधार'' नाटक पुरूश सत्तात्मक समाज में नारी की उत्पीड़ित नियति, मानवीय सम्बन्धों में विश घोलती सत्ता की घृणित राजनीति तथा स्त्री–पुरूश सम्बन्धों में अहं की टकराहट आदि संवेदनाओं को स्पर्ष करता है। समाज व्यवस्था के केन्द्र में बैठे पुरुश को ही सम्पूर्ण निर्णय करने का अधिकार है, और उसके समस्त दुश्परिणामों भोगने के लिए नारी विवष है। यही विड़म्बना इस कृति में गांधारी के माध्यम से नाटककार ने व्यंजित की है।

REFERENCE

1. ''कोमल गांधार'' – शंकर शेष, पृ. 12–13. द्य 2. ''कोमल गांधार'' – शंकर शेष, पृ. 52. द्य 3. ''कोमल गांधार'' – शंकर शेष, पृ. 51. द्य 4. नारी अस्मिता की परख – डॉ. दर्शन पाण्डेय, पृ. 57. द्य